

李清原著

# 折狱新语注释

华东政法学院法律古籍整理研究所

吉林人民出版社

## 内 容 介 绍

本书是我国现存明代唯一的一部判词集，它是明朝末年宁波府判官在任时审理各类民刑案件的结案判牍专辑，清朝政府列为禁书，仅遗孤本。

本书共收判词二百十一篇，分十个方面，每篇以“审得”语领起，点明当事人，案由，承接夹叙夹议，层层推进，节节落实，最后下定语。通篇章法严整，词藻纷披，简洁精粹，喻指流畅，是一部颇具特色的判词书。李清判案精明廉直，守正持平，剖决如流，展现了各种错杂的人情关系和矛盾。

## 折 狱 新 语

华东政法学院法律古籍整理研究所

\*

商务印书馆上海发行所发行

商务印书馆上海印刷厂印刷

\*

开本 850×1168 印张 17.5 插页 2 字数 402,000

1989年12月第1版 1989年12月第1次印刷

印数：1—2,000

ISBN7-206-00439-3D·134 定价：9.00元

## 前 言

《折狱新语》是我国现存唯一的明代判词专集，共收判词二百十篇。它是明季李清在宁波府推官任内审理各类民刑案件的结案判词，是这一阶段的地方司法实录。这本专集内容丰富，析案分明，定性准确，断语精辟，文辞优美，骈散结合，是自成一家之作，是明代最有代表性的判词专集。这部专集，不仅提供了制作判词（今称“判决书”）这一法律文书具体生动的借鉴材料，而且提供了研究我国封建社会法律，特别关涉到明代律、例最有价值的佐证；也可以说，它是古代判词史上的高峰。其中通过桩桩案件所展现的各阶层的多样动态，反映了中国封建社会末期各种关系和矛盾，实为我国法学界与史学界研究明史、明律不可多得的第一手材料。

为此，我们早在八年前就注意到对这一珍贵的法律遗产进行发掘整理。但是，此书明刻本到清初即列入禁书。由于十年浩劫，书版匮乏。起初，我们仅找到三十年代旧中央书店的铅印本，据以标点、注释，但在注释过程中，发现它讹错颇多。又经过数年努力，终于在北京图书馆找到了崇祯刻本。崇祯刻本的发现，我们如获至宝，因为它

是孤本！孤本是作者在世时的刻本，即原始刻本，也是最好的本子。因此，我们就据孤本进行了整理。在整理过程中，我们又发现中央书店铅印本颇多删节，而且错检铅字比比皆是。现在，我们依孤本原文进行标点注释，希望能将孤本整理成今人容易读懂的善本，也为法学研究和史学研究，为社会主义法制建设作点贡献。

作者李清（1602——1683）字映碧，一字心水，南直隶州兴化（今江苏兴化县）人，明崇祯辛未进士授宁波府推官，考绩最优，升刑科给事中转吏、工科给事中至大理寺丞，事崇祯、弘光两朝。明亡后，隐居家乡以著述自娱。清康熙间征修明史不赴。遗著有《南渡录》、《南北史合注》、《澹宁斋史话》、《澹宁斋笔记》及《折狱新语》（参见《明史·李春芳传附》、《清史稿·隐逸》本传及其他方面有关资料）。清廷嫉其抗节不仕，上述著作，均被列为禁书，不得流传。

中华书局近出版《三垣笔记》是觅得抄本印行的。该书为李清三任给谏所纪的时人、时事，多为清修明史所讳、所无者，诚属珍贵史料。但这是后人抄传的李清遗稿；因为李清的著作中，只有这部《折狱新语》镌板行世，也可见当时影响之大！后来由于遭清代严禁，仅遗孤本。惜乎！明珠蒙尘，长期弃置。

孤本首卷署有黄裳的弁题，黄裳先生是当代藏书家，他对《狱新语》评赞说：“老官案牒（意即老吏断狱的文书）。”又：“其中有一代律法（指引断的明律、例），且富市井人情（指深切理解社会底层群众的人情事理），

非无用之书也。”中央书店扉页亦题为“制断谨严，不可多得”。这不过是后人留下的片言只语的肯定，然而其实际意义价值，何止这些！

《折狱新语》可推为我国封建社会判词规范中典型著作。尤其难得的是这部案例齐全的巨著，竟出自一地、一人之手，真可谓“一帜独树，千古创见”，“前无古人”了！并且自清禁以来，明代名判，无闻于世。《折狱新语》崇祯板本的发现，填补了这个历史阶段判词的一大空白，其历史价值，弥足珍贵。

历代论狱，有“天下案发于州县”之说，是指一切民、刑诉讼案件，必先起自州县地方，即及时掌握案件多发性在当地的原始材料，十分重要。这不但成为州县级办案根据审结的正确与否，也成为州县之上的府审级就近验证拟断，报由道、司以上审级准、驳的关键所在。

明制，府的一级，设“理刑厅”以推官（多为独任）行使审判，是高于县级的专职实际的地方司法官吏，可谓“一肩重任”够繁剧的了！因而推官一职，非学识并优、才德兼备的人，确乎难胜其任。客观的看，古来做到尽心决狱，为民伸理有卓犖表现的推官并不多见。北宋有个欧阳观折狱为人称道，但可惜无名判遗世；至明季才有李清及其《折狱新语》相得益彰。李清通情达理，守正持平，案无留牍，剖决如流，在《折狱新语》中简直可闻其声，可见其人。的确，其心“一清如水”（李清字心水），他是我国封建时代地方司法中一位最杰出的法官。

这部判词，每篇以散文间入骈句的笔法，自“审得”

语领起，开门见山，点明当事人、案由，承接夹叙夹议、层层推进，条分缕析、处处紧扣，前后呼应、节节落实，最后束入断语，戛然而止。通篇章法严整，语无留滞，字无虚用，真所谓“一气呵成，无懈可击者”，而词藻纷披，如量珠般倾注，又是它的行文余事了。至其按语，翔实而宏气魄，简要而多精采。除必不可少的公牍术语外，辄融入经史百家旁及杂记小说之言，印证生动，喻指流畅；又随就案情或某人、某地发挥推勘入实，切中法意，各如其分；有时涉笔成趣，妙语双关，风怀隽永，耐人深味。但旨在启人警世，形似诙谐，实则严正。因而，李清办案的精明廉直，通过判词的练达语言，表现得十分准确有力。

诚然，作为封建执法官吏的李清，也跟古代著称的所有循吏、清官人物一样，有其时代的阶级的局限，在《折狱新语》中有所反映。有些案判，明显地带上了封建迷信的色彩，甚至很不严肃地夹杂些绮语渲染。这些，则属《折狱新语》的糟粕部份。我们在注释中分别予以指出，以供读者参考。

本书曾据中央书店铅印本注释，由苏经逸注六卷，孟国钧注三卷，陆有珣注一卷。后由陆有珣改稿完成，再根据崇祯本补注全稿，由辛子牛审核润饰。由于我们学术水平不够，舛谬所在难免，至祈阅读同志，惠予指正幸！

陆有珣 辛子牛  
一九八七年七月

## 折狱新语注释总目

|    |                 |         |
|----|-----------------|---------|
| 前  | 言 .....         | ( )     |
| 卷一 | 婚姻 (二十六篇) ..... | ( 1 )   |
| 卷二 | 承袭 (十六篇) .....  | ( 83 )  |
| 卷三 | 产业 (二十四篇) ..... | ( 137 ) |
| 卷四 | 诈伪 (五十七篇) ..... | ( 203 ) |
| 卷五 | 淫奸 (三十三篇) ..... | ( 323 ) |
| 卷六 | 贼情 (十四篇) .....  | ( 407 ) |
| 卷七 | 钱粮 (七篇) .....   | ( 435 ) |
| 卷八 | 失误 (四篇) .....   | ( 453 ) |
| 卷九 | 重犯 (十篇) .....   | ( 467 ) |
| 卷十 | 冤犯 (十九篇) .....  | ( 493 ) |
| 附: | 疑狱申语 (一篇) ..... | ( 538 ) |

## 折狱新语注释目录

### 卷一 婚姻（二十六篇）

|     |     |        |
|-----|-----|--------|
| 一   | 逼嫁事 | ( 3 )  |
| 二   | 劫妻事 | ( 6 )  |
| 三   | 冤命事 | ( 8 )  |
| 四   | 孽破事 | ( 9 )  |
| 五   | 斩占事 | ( 12 ) |
| 六   | 法斩事 | ( 14 ) |
| 七   | 谪拆事 | ( 17 ) |
| 八   | 活拆事 | ( 21 ) |
| 九   | 拆妻事 | ( 23 ) |
| 十   | 姻变事 | ( 27 ) |
| 十一  | 飞攫事 | ( 31 ) |
| 十二  | 环烹事 | ( 34 ) |
| 十三  | 枉法事 | ( 38 ) |
| 十四  | 砍门事 | ( 42 ) |
| 十五  | 讹诈事 | ( 44 ) |
| 十六  | 谋劫事 | ( 48 ) |
| 十七  | 黑冤事 | ( 51 ) |
| 十八  | 欺寡事 | ( 53 ) |
| 十九  | 抄虏事 | ( 58 ) |
| 二十  | 灭亲事 | ( 62 ) |
| 二十一 | 硬奸事 | ( 64 ) |

|     |     |        |
|-----|-----|--------|
| 二十二 | 硬配事 | ( 67 ) |
| 二十三 | 强占事 | ( 69 ) |
| 二十四 | 拐妻事 | ( 72 ) |
| 二十五 | 忤杀事 | ( 75 ) |
| 二十六 | 首盗事 | ( 78 ) |

## 卷二 承袭 (十六篇)

|    |     |         |
|----|-----|---------|
| 一  | 谋爵事 | ( 85 )  |
| 二  | 醢嚼事 | ( 90 )  |
| 三  | 究抄事 | ( 93 )  |
| 四  | 势抄事 | ( 95 )  |
| 五  | 冒袭事 | ( 99 )  |
| 六  | 屠戮事 | ( 102 ) |
| 七  | 赤冤事 | ( 104 ) |
| 八  | 抄寡事 | ( 107 ) |
| 九  | 抄诈事 | ( 111 ) |
| 十  | 抄灭事 | ( 114 ) |
| 十一 | 活杀事 | ( 116 ) |
| 十二 | 馘叛事 | ( 121 ) |
| 十三 | 叛父事 | ( 124 ) |
| 十四 | 占产事 | ( 127 ) |
| 十五 | 忤弑事 | ( 130 ) |
| 十六 | 虐节事 | ( 133 ) |

## 卷三 产业 (二十四篇)

|   |         |         |
|---|---------|---------|
| 一 | 抄灭事     | ( 139 ) |
| 二 | 叛抄事 (一) | ( 141 ) |
| 三 | 聚抄事     | ( 143 ) |
| 四 | 逆抄事     | ( 145 ) |

|     |        |       |
|-----|--------|-------|
| 五   | 惨伤事    | (148) |
| 六   | 冒勋事    | (151) |
| 七   | 叩清事    | (152) |
| 八   | 芟冢事    | (155) |
| 九   | 势抄事(一) | (157) |
| 十   | 人命事    | (160) |
| 十一  | 势抄事(二) | (163) |
| 十二  | 黑冤事    | (166) |
| 十三  | 屠劫事    | (169) |
| 十四  | 惨斩事    | (172) |
| 十五  | 斩祧事    | (175) |
| 十六  | 载冤事    | (178) |
| 十七  | 大冤事    | (180) |
| 十八  | 叛抄事(二) | (183) |
| 十九  | 宪贼事    | (185) |
| 二十  | 势抄事(三) | (187) |
| 二十一 | 冒抄事    | (191) |
| 二十二 | 天斩事    | (193) |
| 二十三 | 宪斩事    | (196) |
| 二十四 | 占产事    | (199) |

#### 卷四 诈伪(五十七篇)

|   |        |       |
|---|--------|-------|
| 一 | 灭门事    | (205) |
| 二 | 诈抄事    | (208) |
| 三 | 枉法事(一) | (210) |
| 四 | 真命事    | (212) |
| 五 | 叛诈事(一) | (214) |
| 六 | 假官事    | (217) |

|     |        |       |
|-----|--------|-------|
| 七   | 黑抄事    | (220) |
| 八   | 倡乱事    | (222) |
| 九   | 酷抄事    | (224) |
| 十   | 强劫事(一) | (225) |
| 十一  | 枉法事(二) | (227) |
| 十二  | 斩乱事    | (229) |
| 十三  | 宪典事    | (231) |
| 十四  | 冤抄事    | (234) |
| 十五  | 冒滥事    | (236) |
| 十六  | 奸抄事    | (238) |
| 十七  | 屠诈事    | (239) |
| 十八  | 叛屠事    | (241) |
| 十九  | 枉诈事    | (244) |
| 二十  | 学政事    | (245) |
| 二十一 | 谋命事    | (249) |
| 二十二 | 逼寡事    | (250) |
| 二十三 | 指官事    | (251) |
| 二十四 | 仇抄事    | (255) |
| 二十五 | 奸杀事(一) | (257) |
| 二十六 | 强掳事    | (261) |
| 二十七 | 凌辱事    | (263) |
| 二十八 | 拿究事    | (265) |
| 二十九 | 叠烧事    | (267) |
| 三十  | 敕并事    | (268) |
| 三十一 | 访拿事    | (270) |
| 三十二 | 乱鹩事    | (272) |

|     |         |       |
|-----|---------|-------|
| 三十三 | 人命事 (一) | (274) |
| 三十四 | 强劫事 (二) | (276) |
| 三十五 | 漏斩事     | (277) |
| 三十六 | 卫蠹事     | (279) |
| 三十七 | 简典事     | (280) |
| 三十八 | 攒吞事     | (282) |
| 三十九 | 杀捕事     | (283) |
| 四十  | 叛诈事 (二) | (285) |
| 四十一 | 叛诈事 (三) | (287) |
| 四十二 | 人命事 (二) | (289) |
| 四十三 | 妖术事     | (290) |
| 四十四 | 亟剪事     | (293) |
| 四十五 | 奸杀事 (二) | (295) |
| 四十六 | 宪斩事     | (297) |
| 四十七 | 人命事 (三) | (299) |
| 四十八 | 抄产事     | (301) |
| 四十九 | 救行事     | (302) |
| 五十  | 扛抄事     | (304) |
| 五十一 | 虎啮事     | (306) |
| 五十二 | 扮诈事     | (308) |
| 五十三 | 校横事     | (310) |
| 五十四 | 通奸事     | (313) |
| 五十五 | 杀妻事     | (315) |
| 五十六 | 剿叛事     | (317) |
| 五十七 | 举劾事     | (320) |

## 卷五 淫奸 (三十三篇)

|   |     |       |
|---|-----|-------|
| 一 | 大乱事 | (325) |
|---|-----|-------|

|     |         |         |
|-----|---------|---------|
| 二   | 活占事     | ( 327 ) |
| 三   | 奸占事 (一) | ( 331 ) |
| 四   | 奸占事 (二) | ( 332 ) |
| 五   | 奸杀事 (一) | ( 335 ) |
| 六   | 奸劫事     | ( 338 ) |
| 七   | 庠奸事     | ( 340 ) |
| 八   | 斩奸事     | ( 342 ) |
| 九   | 不法事     | ( 344 ) |
| 十   | 串烧事     | ( 345 ) |
| 十一  | 黑劫事     | ( 349 ) |
| 十二  | 通奸事     | ( 351 ) |
| 十三  | 异变事     | ( 353 ) |
| 十四  | 奸杀事 (二) | ( 355 ) |
| 十五  | 逼命事     | ( 357 ) |
| 十六  | 亲剿事     | ( 359 ) |
| 十七  | 占妇事     | ( 361 ) |
| 十八  | 拐媳事     | ( 364 ) |
| 十九  | 谋杀事     | ( 366 ) |
| 二十  | 朋奸事     | ( 369 ) |
| 二十一 | 斩逆事     | ( 372 ) |
| 二十二 | 奸杀事 (三) | ( 375 ) |
| 二十三 | 急剪事     | ( 378 ) |
| 二十四 | 奸杀事 (四) | ( 380 ) |
| 二十五 | 拐妻事     | ( 383 ) |
| 二十六 | 淫叛事     | ( 385 ) |
| 二十七 | 劫妻事     | ( 388 ) |
| 二十八 | 盗嫂事     | ( 391 ) |

|     |     |         |
|-----|-----|---------|
| 二十九 | 奸酷事 | ( 394 ) |
| 三十  | 占奸事 | ( 396 ) |
| 三十一 | 抄杀事 | ( 398 ) |
| 三十二 | 奸阱事 | ( 401 ) |
| 三十三 | 首奸事 | ( 404 ) |

#### 卷六 贼情 (十四篇)

|    |     |         |
|----|-----|---------|
| 一  | 斩劫事 | ( 409 ) |
| 二  | 窝盗事 | ( 410 ) |
| 三  | 捕诈事 | ( 413 ) |
| 四  | 飭法事 | ( 416 ) |
| 五  | 歼害事 | ( 417 ) |
| 六  | 缉贼事 | ( 418 ) |
| 七  | 宪诛事 | ( 419 ) |
| 八  | 贼情事 | ( 421 ) |
| 九  | 宪斩事 | ( 423 ) |
| 十  | 虎啖事 | ( 424 ) |
| 十一 | 飞诈事 | ( 426 ) |
| 十二 | 人命事 | ( 428 ) |
| 十三 | 急救事 | ( 430 ) |
| 十四 | 斩赃事 | ( 432 ) |

#### 卷七 钱粮 (七篇)

|   |     |         |
|---|-----|---------|
| 一 | 仓库事 | ( 437 ) |
| 二 | 焚弁事 | ( 439 ) |
| 三 | 蠹饱事 | ( 441 ) |
| 四 | 考选事 | ( 443 ) |
| 五 | 恳请事 | ( 445 ) |
| 六 | 蠹侵事 | ( 447 ) |

|       |         |
|-------|---------|
| 七 权斂事 | ( 449 ) |
|-------|---------|

## 卷八 失误 (四篇)

|       |         |
|-------|---------|
| 一 大夥事 | ( 455 ) |
| 二 无援事 | ( 458 ) |
| 三 提究事 | ( 462 ) |
| 四 天仇事 | ( 463 ) |

## 卷九 重犯 (十篇)

|           |         |
|-----------|---------|
| 一 出巡事     | ( 469 ) |
| 二 二命事     | ( 471 ) |
| 三 人命事 (一) | ( 473 ) |
| 四 海盗事     | ( 476 ) |
| 五 盗杀事     | ( 479 ) |
| 六 人命事 (二) | ( 481 ) |
| 七 火劫事     | ( 482 ) |
| 八 杀父事     | ( 484 ) |
| 九 谋命事     | ( 485 ) |
| 十 劫漏事     | ( 488 ) |

## 卷十 冤犯 (十九篇)

|           |         |
|-----------|---------|
| 一 辨冤事     | ( 495 ) |
| 二 缉拿事     | ( 498 ) |
| 三 查获事     | ( 500 ) |
| 四 捉获事     | ( 502 ) |
| 五 拿获事     | ( 504 ) |
| 六 泣救事     | ( 506 ) |
| 七 哨获事     | ( 508 ) |
| 八 出巡事 (一) | ( 510 ) |
| 九 杀命事     | ( 512 ) |

|    |          |       |
|----|----------|-------|
| 十  | 擒获事      | (513) |
| 十一 | 劫杀事(一)   | (517) |
| 十二 | 罩冤事      | (519) |
| 十三 | 出巡事(二)   | (521) |
| 十四 | 出巡事(三)   | (524) |
| 十五 | 劫杀事(二)   | (526) |
| 十六 | 苏蚊事      | (528) |
| 十七 | 强劫事      | (530) |
| 十八 | 天仇事      | (534) |
| 十九 | 出巡事(四)   | (537) |
| 附: | 疑狱审语(一篇) | (538) |

# 卷 一

## 婚 姻